

मौलाबक्ष व उनसे संबधित दुर्लभ तस्वीरे



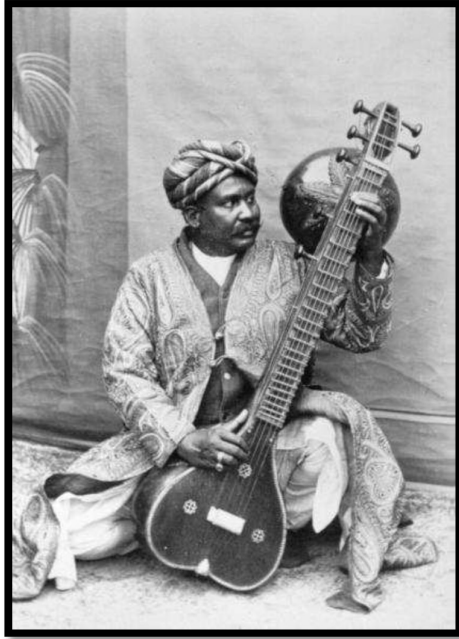
C.R.DAY. (1891), THE MUSIC AND MUSICAL INSTRUMENTS SOUTHERN INDIA, PP.108



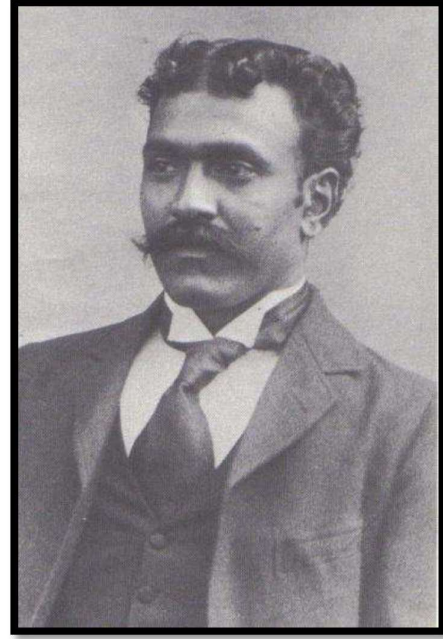


श्रीमन्नृसिंहाचार्य महाराज के साथ मोलाबक्ष सितार बजाते हुए (आचार्य की दाहिने तरफ), तारीख.२०-०७-१८८० ।

श्रीमन्नृसिंहाचार्य जी, शताब्दी-स्मृति-ग्रंथ, श्रीमन्नृसिंहाचार्य जी शताब्दी समिति, वड़ोदरा.१९५४, पृ.११६ ।



मौलाबक्ष के ज्येष्ठ पुत्र मुर्तजाखान



मौलाबक्ष के कनिष्ठ पुत्र  
डॉ. अलाउद्दीन खान



मौलाबक्ष के नाती ईनायत खान, बड़ौदा. १८९६





सन् १८९० में वडोदरा की गायनशाला में मौलाबक्ष की स्मृति में आयोजित सम्मेलन, जिसमें बीच में मौलाबक्ष के चित्र की दाहिने ओर दूसरी पंक्ति में कुर्सी पर रहमत खान (इनायतखान के पिताश्री), मौलाबक्ष के ज्येष्ठ पुत्र मुर्तजाखान, बायीं तरफ डॉक्टर अल्लाउद्दीनखां, इनायतखान, उस्मानखान इत्यादि। पहली पंक्ति में मुर्शरफ खान (इनायतखान के भाई)। गुजरातनु संगीत अने संगीतकारो (हरकान्त शुक्ल), माहिती खातुं, गुजरात सरकार द्वारा प्रकाशित, गांधीनगर, अगस्त १९७५, पृष्ठ क्र. ४८ ।



The Royal Musicians of Hindustan in America, 1911-1912

बायीं ओर से तबला वादक रामास्वामी, मुहम्मद अली खान, इनायतखान के भाई-मुर्शरफ खान और महेबूब खान, सबसे ऊपर इनायतखान ।



सन् १८९० में वड़ोदरा की गायानशाला



१९१६ में बड़ौदा में आयोजित पहली संगीत परिषद जिसमें श्री भातखंडे, श्री विष्णु दिगंबर, जाकरुद्दीन खान, फैय्याजखान, आदित्यरामजी जैसे नामांकित संगीतकारों ने अपनी हाजरी दी थी ।

गुजरातनु संगीत अने संगीतकारो (हरकान्त शुक्ल), माहिती खातुं, गुजरात सरकार द्वारा प्रकाशित, गांधीनगर, अगस्त १९७५, पृष्ठ क्र. ४८



भूतपुर्व वड़ोदरा राज्य का सरकारी बैन्ड । मध्य में उस्ताद मौलाबक्ष के कनिष्ठ पुत्र  
डॉ. अल्लाउदिन पठाण ।

महमूद योस्कीन द्वारा ई-मेल से प्राप्त, २-०३-२०१६ ।





प्रिति-भोजन के समय संगीत का आस्वाद लेते हुए महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय व अतिथी ।



संगीत का आस्वाद लेते हुए महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय व आमंत्रित ब्रिटिश अतिथी ।





दरबार में नृत्य का आस्वाद लेते हुए महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय व आमंत्रित अतिथी ।

श्री चंद्रशेखर पाटिल, बड़ौदा के आर्ट हिस्टोरियन से प्राप्त फोटोग्राफ्स । दिनांक- २०-३-२०१६ ।

# HINDU MUSIC

FROM  
VARIOUS AUTHORS.

COMPILED AND PUBLISHED

BY

RAJAH COMM. SOURINDRO MOHUN TAGORE,  
Mus. Doc., F.R.S.L., M.R.A.S.,

Companion of the Order of the Indian Empire ;

KNIGHT COMMANDER OF THE FIRST CLASS OF THE ORDER OF  
ALBERT, SAXONY ;

OF THE ORDER OF LEOPOLD, BELGIUM ;

OF THE MOST EXALTED ORDER OF FRANCIS JOSEPH, AUSTRIA ;

OF THE ROYAL ORDER OF THE CROWN OF ITALY ;

OF THE MOST DISTINGUISHED ORDER OF DANNEBROG, DENMARK ;

AND OF THE ROYAL ORDER OF MELUSINE OF

PRINCESS MARY OF LUSIGNAN ;

FRANC CHEVALIER OF THE ORDER OF THE KNIGHTS OF THE  
HOLY SAVIOUR OF MONT-REAL, JERUSALEM, RHODES AND MALTA ;

COMMANDEUR DE ORDRE RELIGIEUX ET MILITAIRE DE

SAINT-SAUVEUR DE MONT-REAL, DE SAINT-JEAN DE JERUSALEM,  
DU TEMPLE, DU SAINT SEPULCRE, DE RHODES ET MALTE REFORME ;

KNIGHT OF THE FIRST CLASS OF THE IMPERIAL ORDER OF THE

"PAOU SING," OR PRECIOUS STAR, CHINA ;

OF THE SECOND CLASS OF THE HIGH IMPERIAL ORDER OF

THE LION AND SUN, PERSIA ;

OF THE SECOND CLASS OF THE IMPERIAL ORDER

OF MEDJIDIE, TURKEY ;

AND OF THE ROYAL MILITARY ORDER OF CHRIST, PORTUGAL ;

KNIGHT OF THE ORDER OF BASABAMÁLÁ, SIAM ;

AND OF THE GURKHA STAR, NEPAL ; "NAWAB SHAHZADA"

FROM THE SHAH OF PERSIA, &c., &c., &c.

IN TWO PARTS.

~~~~~  
SECOND EDITION.  
~~~~~

Calcutta:

PRINTED BY I. C. BOSE & CO., STANHOPE PRESS,  
249, BOW-BAZAR STREET.

1882.

[All rights reserved.]

قدیم زمانہ سے جو آج تک ہندوستان میں علم  
 سنگیت مروج ہی اور جو ہمارے نزدیک تمام عالم  
 کی سنگیت سے اچھا اور بڑا ہی اور اُس کے عالم اور نیدیون  
 نے اس علم کی بنیاد کو کہ جو آواز ہی تین چیز  
 پر قائم کیا ہی ایک سر کہ اُس کے سات قسم ہی  
 دوسرے تال کہ اُس کی بہت قسم ہی تیسرے لے  
 کہ جسے زمانہ کہتی ہیں پس سر کو ترکیب دیا ہی  
 سروتی اور مورجہنا اور سنیورن اور اسنیورن سے اور  
 تال کو ترکیب دیا ہی سم اور امتیت اور نے سم  
 اور اناگت سے ما ترونکی حساب پر اور لے کو تقسیم  
 کیا ہی درت مدہ بلنیت پر پس ہم لوگ آج تک  
 انہیں قاعدوں پر اس علم کو برتاویں لاتی ہیں اور  
 چونکہ سرتی آواز سے پیدا ہوتی ہی اور اُس سے سر  
 بنا ہی اس واسطے اسکو ہم سمب لوگ سوکی بنیاد اور  
 اصل کہتی ہیں اور انہیں سرونکی چربائی اور اتارنی  
 اور بدلنی سے ہر ایک قسم کی راگ دراگنی پیدا ہوتی  
 ہیں پس اب خاننا چاہئے کہ اس علم کا ظہور دو چیز  
 سے ہو تا ہی ایک گلو سے کہ اُسے گانا کہتی ہی دوسرا



جنتر اور ساز سے کہ اوسے بجانا کہتی ہیں لیکن گانا  
 اول اور اصل ہی اور گلا اوسکی پیدائش کے جگہ ہی  
 کہ جس سے گائے والی اوستا سات سرونکی ترکیب  
 کومل مذہ آنے کومل تیور مذہ تیور آتی تیور اور ہریک  
 قسم کے راگ راگنی کے الپ اور اُسکی سرونکے پہلاز  
 کو بہت اچھی طرح قاعدوں سے ہر ایک کا فرق دکھلا  
 کر ادا کرتی ہی بغیر دوسریکی مدد کی اور یہہ امر  
 قدرتی ہی برخلاف جنتر کی کہ وہ گلے کی نقل ہی  
 اور ہاتھ کا محتاج ہی جیسی ہیں رباب ستار سرور  
 وغیرہ کہ بغیر دوسریکی مدد کے کوئی ترکیب سرون  
 کی اُس سے ظاہر نہیں ہوتی بس جو شخص یہہ  
 کہی کہ سرونکی تقسیم گلے سے ایسی نہیں ہو سکتی  
 جیسی ساز سے سو اُسکا دعوی غلط ہی خواہ پورب  
 کا پندت اس علم کا ہو خواہ ایشیا کا مناسب اُسکو کہ  
 ہمارے پاس آدے ہم اُسکو بہت اچھی طرح سے سرون  
 کا حساب گلے سے کر دکھائیذمگی بلا تردد اور کیا یہہ  
 بات مشہور نہیں ہی کہ اصل اصل ہی ہی نقل نقل  
 ہی ہی یعنی جو چیز کہ اصل سٹی اچی ظاہر ہوگی وہ  
 نقل سے نہ ہوگی یعنی گلا اصل ہی ساز اُسکی نقل ہی  
 پس اس علم کی باریکیان اور سرونکا حساب اور لی کا  
 گہٹا ویرہا فقط کیاب میں پڑ ہی سنی کہی نہیں  
 معلوم ہوتا ہی خالی نام جانتا ہی جب تک کہ گلے

سے بہت برسوں ریاض نہ کیا ہو چنانچہ بڑی بڑی  
اوسٹان لائے والے ہندوستان کے کیا ہندو کیا مسلمان جب  
اونہوئے برسوں اس علم میں ذات دن محنت کی ہی  
تب اونہوئے سرونگا ملانا اور اوسکی تقسیم اور جتنی  
مشکل کام متعلق امکی ہیں اپنی اپنی علم اور عقل  
کے زور سے اپنی اپنی کاموں میں معلوم کیا ہی اگر کوئی  
بڑی لائق شخص اس علم کی نام کے جانی والی  
ڈانڑی مانجھی لوگونکا گانا کہ جو بالکل سب علم سے  
جاہل ہوتی ہیں سنکر یہ کہیں اور سمجھیں کہ  
ہندوستان کا عمدہ اور سب سے بہتر گانا ہی تو ہم  
اونکی سمجھ کے بہت تعریف کرتی ہیں کیون نہو  
جسکی جیسی عقل اوسکی ویسی ہی سمجھ اونکو  
سوائے اسکی اور کیا کہیں تمام ہندوستان میں اتم اور  
اعلیٰ سنگیت کا ایک ہی چلن ہی کہ جسے سب لوگ  
بڑی آئے ہیں اور برتاو کرتی ہیں صرف فرق زبان  
اور ترکیب کا ہی پس اب ہم یہ کہتی ہیں کہ جو  
سری حکیت بابو کہتے وہیں گسائیں نے بہارت برش  
کے اس پرانی علم سنگیت کی سرونگا گھٹار اور بڑہار  
اور لکھنی کا حساب سنکرت اور فارسی کے کتابونکی  
قاعدوں سے ازسرنو درست کیا اور قائم کیا ہی وہی  
سرونگا حساب وغیرہ ہم سب لوگونکی رای کے مطابق  
ہی اور قاعدہ سے باہر نہیں اسمیں کیا ہندو کیا مسلمان

ڪا لڳ گڏي سڀ ڪي اڳ هي مت هي ڀس جو  
حضرات ڪه اس علم ڪو خوب جان تي هيڻ اور ارستاد  
هيڻ اورنڪي خدمت مين عرض هي ڪه اس تحرير  
تصديق پراڻي دستخط فرماوين نهايت احسان هو ڪا فقط

- 
- \* العبد ڪالي پرشن بنداپادهائے سڪرٿري اسڪول  
\* سنگيت بنگاله بديالي \*  
\* العبد \*  
\* احمد خان خيالي \*  
\* العبد \*  
\* عليجان خيالي \*  
\* العبد \*  
\* محمد خان بين ڪار \*  
\* العبد \*  
\* تاج خان دهرپدي \*  
\* العبد \*  
\* احمد خان دهرپدي دترانه سراي \*  
\* العبد \*  
\* حيدر خان دهرپدي دترانه سراي \*  
\* العبد \*  
\* حڪيم غلام محمد قانون نواز \*  
\* العبد \*

\* نعمت الله خان عقي عنه سرود نواز \*

\* العبد \*

\* غلام حسين خان دهرپدي \*

\* العبد \*

\* جنون خان سوز خوان \*

\* العبد \*

\* عيوض علي خان سوز خوان \*

\* العبد \*

\* عنايت حسين خان دهرپدي \*

\* العبد \*

\* احسان علي خان خيالي \*



## योगशाय नमः ।

कदीमजमानेसैं यो आजतक हिन्दुस्तानमे इल्म सङ्गीतके यो हमारे नजदीक तमाम दुनियाके सङ्गीतसे अच्छा अवर बढ़ाहै, उसके आलिम अवर पण्डितने इष् इल्मकी बुनियादको के जो अवाजहै, तिनचिज पर कायम कीया है। एक सुर, जिस्की सात किस्म। दोसरे तालकी, जिस्की बड़त किस्म है। तसरी लय, जिसे जमाना कहते है। इसुरको तरकीब दीया है श्रुति, सूर्जन अवर सम्पूर्ण अवर असम्पूर्णसे अवर तालको तरकीब दोया है। सम, अतीत, अवर विषम अवर अनागतसे मात्ताके हिसावपर अवर लयको तकसीम किया है। दुरुत, मध, विलम्बित पर पस हम लोग आजतक उनयी कायदापर इस इल्मकी वरतावमे लाये है। अवर जोके श्रुति अवाजसे पयदा ऊड़है अव उसे सुर बनायाहै। इस-वास्ते इस्कोहम सुरकी बुनीयाद ओ मूल कहते है। अवर इन सुरोंके चढ़ाने, उतारने अवर बदलनेसे हरेक रकमकी रागरागिणी पयदा होती है; पस अव जानना चाहिये इस् इल्मका प्रकाश होना दोचिजसे होता है। एक गलेसे, जीसे जीस्ते गाना कहते है।

क्षेत्र मोहन गोस्वामी की स्वरलिपि को समर्थन हेतु प्रो.मौलाबक्ष द्वारा लिखित प्रमाणपत्र जिसका कालीप्रसाद द्वारा देवनागरी में अनुवाद: "हिन्दु म्युझीक, असे.अम.टागोर. १८८२, पृ.३८९-३९७ ।

दोसरा यन्त्रसें, जेसे जीखे बजाना कहते हैं। लेकिन गाना पहिले, अवर जड़ है अवर कण्ठ उसके पयदा इश्की जगा है की जीखे गानेवाले ओस्ताद सातों सुरोंकी तरकीव कोमल, मध्यकोमल, अतिकोमल, तिवर, मध्यतिवर, अतितिवर अवर हरेकीखकी राग-रागिणी की अलाप उसके फयलायके वज्जत अच्छीतरह कायदोंसे हरेक तरकीवत देखलायकर अदां करतेहें वगयर दोसरेको मदतके अवर एकाम कुदरती है वरखीलाफ यन्त्रके केओ गलेका नकल है अवर हाथका मोहताज है जैसे वीणा रवाव सीतार सरोद ओगयरह की वे दोसरेकी मदतके कोइ तरकीव सुरोंकी उखे जाहिर नहीं होती पस यो सक्स इखे कहे केसुरोंकी तकसीम गलेसे वैसे नहीं होसकती जैसे यन्त्रसें सो उस्का दावा गलत है चाहे इयोरोपका पण्डित इस इल्का हो चाहे इशीयाकाहो ओसे चाहीये हमारे पास आवे हम उस्को वज्जततरेसे सुरोंका हीसाव गलेसे कर देखा-वेगें बेतरदूत अवर फीकरके अवर एवात मसुर नहीं है असल के असलीहि है, नकल नकलहि है, याने जो चीजके असलसे अच्छी जाहिर होगी, नकलसें नहीं होगी, पस गला आसल है यन्त्र उस्की नकलहै पस इस इल्की वारिकी अवर

सुरोंका हीसाव अवर लय घटाव बढ़ाव कीतावमे पढ़नेसे कवही मालुम नही होताहै खाली नाम जानना जवतक् गलेसे वज्रत रोज वरसों रीयाज न कीया हो जयसे बड़े बड़े ओस्ताद गानेवाले भारतवर्षके क्या हिन्दु क्या मुसलमान जब इनोने वरसों इस् इल्ममे रात दिन मेहनतका है तब उज्जो मिलाना अवर उक्सी तकसीम अवर जाननेसो मोस्कील काम मोनासीव इस्के है। की अपने अपने इल्म अवर अक्कीलकी योर्सें अपने अपने कानोमे मालुम करलेते है। अगर कोइ बड़े लायक सक्स इल्मके नामके जानेवाले डांडी माजी लोगोंके गानेको जो विलकुल सब इल्मसे जाहिल होते है ; सुन्कर ए समभोगि हिन्दु-स्तानका सबसे अच्छा एही गानाहै तो हम अवर उनकी समझकी वज्रत् तारीफ करते है, क्यो नही जीस्की जयसी अक्कील उसकी ओसीही समझ उनको सवाय अवर क्या कहै। तमाम भारतवर्षमे उत्तम अवर बेहतर सङ्गीतका एकीतरह चलन है ; जैसे सब लोग वरते आवे है, वत्ताओ करते है, सीरीफ फरक जवान और तरकीवका है। पस् हम ए कहते है, की यो श्रीयुत बाबु चेलमोहन गोस्वामीने भारतवर्षके इस्पुराने इल्म सङ्गीतके सुरोंके

घटाने अवर बढ़ाने लीखने अवर वरतामे लानेका  
 हीसाव इस् इल्मकी संस्कृत अवर फारसीकि कीता-  
 वोंके कायदोसे आजसरेनौ दुरस्तकायमकीया है,  
 ओहि सुरोंका हीसाव ओगयरह हम सब लोगोंकी  
 रायके मोताविक है, कायदेसे वाहर नही है, इस्से  
 क्या हिन्दु, क्या मुसलमान गायक गुणीहिकी एहि  
 मतहै, पस जो लोगके इस् इल्मको खुब जान्ते है  
 अवर ओस्ताद है, उमेद इस्तहरीरकी लेनेकी तस्दीक  
 पर अपनी दस्तखत फर मावेतो निहाएत मेहरवानी  
 और इनायत होगी ॥ १ ॥

PROFESSOR MOWLA BUX,  
*Of Bombay.*

श्रीकालीप्रसन्न वन्द्योपाध्याय,  
 सेक्रेटरी वङ्गसङ्गीतविद्यालय ।

श्रीजोयालाप्रसाद दीच्छत, ध्रुपदिया । सुकलकान्ताप्रसाद ध्रुप-  
 दिया । दसघतहरिनाथ मीसर, ध्रुपदिया । दसघतगङ्गा-  
 प्रसाद मिश्र, ध्रुपदिया । दसघतवद्रीमिसीर, ध्रुपदिया ।  
 वालगीवीन्द मिश्र, ध्रुपदिया । श्रीशिवरामकुमार खेयालिया ।





उस्ताद मौलाबक्ष के पर-पोता नूर महोम्मद और पर-पोती हरुन्निसा खानीम के साथ प्रत्यक्ष मुलाकात

स्थल:- उ.मौलाबक्ष निवास स्थान, याकुत पुरा, बड़ौदा ,गुजरात

दिनांक :- २३-३-२०१५



श्री मन्नुसिंहाचार्य जी के आश्रम (स्थापना वर्ष-सन् १८८२) व निवास स्थान पर प्रत्यक्ष मुलाकात

स्थल:- बाजवाड़ा, बड़ौदा ,गुजरात

दिनांक :- २०-७-२०१७